कर देगी? मैं यह भी जानना चाहता हूं कि भागलपुर की तरह बिहार में और भी दूसरे महत्वपूर्ण स्थान हैं जैसे गया है और दूसरी और ऐसी जगह हैं, तो उन जगहों के लिए इस तरह के टेलीफोन एक्सचेन्ज के मामले में बिहार की उपेक्षा क्यों हो रही है और इस के बारे में भी क्या मंत्री जी विचार करेंगे?

श्री बृजलाल वर्मा: जी हां, उस पर विचार करेंगे। गया में भी मकान की कठिनाई है। इस कारण से अभी हम गया में नहीं खोल रहे हैं। गया में जमीन की उपलब्धि होते ही, वहां पर भी काम को शुरू कर देंगे।

**मध्य प्रदेश में सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मचारी योजना के अन्तर्गत व्यक्तियों को प्रशिक्षण**

*1074. श्री लक्ष्मीनारायण नायक: क्या स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री निम्नलिखित की जानकारी दर्शाने वाला विवरण सभा पटल पर रखने की कृपा करेंगे:

(क) मध्य प्रदेश में सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मचारी योजना के अन्तर्गत 31 मार्च, 1978 तक कितने व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया गया;

(ख) प्रशिक्षण अवधि में सहायता के रूप में उन्हें कितनी धनराशि दी गई और क्या उक्त राशि सभी को दी गई है और यदि नहीं, तो ऐसे प्रशिक्षणार्थियों की जिलावार संख्या कितनी है जिन्हें अब तक उक्त धनराशि प्राप्त नहीं हुई है; और

(ग) टीकमगढ़ और छतरपुर जिलों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या कितनी है और क्या प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन सब व्यक्तियों को रोजगार मिल गया है।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण): (क) 31 मार्च, 1978 तक प्रशिक्षित किये गये जन स्वास्थ्य रक्षकों की कुल संख्या 1671 है।

(ख) 31 दिसम्बर, 1977 तक 819 जन स्वास्थ्य रक्षकों के पहले बैच को प्रशिक्षित किया गया था तथा उन्हें जनवरी, 1978 में तीन महीनों के लिये 200/- रुपये प्रति मास की दर से अर्थात् प्रति व्यक्ति 600/- रुपये का वजीफा दिया गया था। दूसरे बैच अर्थात 852 जन स्वास्थ्य रक्षकों को, जिन्होंने 31 मार्च, 1978 तक अपना प्रशिक्षण पूरा किया, कितना वजीफ़ा दिया गया, यह सूचना जिला स्वास्थ्य अधिकारियों से अभी आनी शेष है। राज्य के जिला स्वास्थ्य अधिकारियों को स्वास्थ्य रक्षक के दूसरे बैच को वजीफा देने के लिए मंजूरी दे दी गयी है।

(ग) टीकमगढ़ जिले में 37 व्यक्ति और छतरपुर जिले में 24 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया। ये कार्यकर्ता सरकारी कर्मचारी नहीं हैं। इन कार्यकर्ताओं ने प्रशिक्षण पाने के बाद अपने-अपने गांव में जन स्वास्थ्य रक्षक के रूप में कार्य करना आरम्भ कर दिया है।

श्री लक्ष्मीनारायण नायक: क्या माननीय मंत्री जी यह बताएंगे कि जिन जन स्वास्थ्य रक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है, क्या उन को सरकार ने उन की सहायता के लिए कुछ दवाइयां और दूसरे साधन दिये हैं, जिस से वे गांव में जा कर गांव वालों का इलाज अच्छी तरह से कर सकें? सरकार इस मामले में उन की कोई सहायता करेगी?

श्री राज नारायण: जी हां। जितने भी जन स्वास्थ्य रक्षक ट्रेनिंग ले कर निकलते हैं, उन को दवाइयों की पेटिका (किट) दी जाती है और उस में बराबर दवाइयां रहती हैं। इस के अलावा उन को 50 रुपए महीना बराबर दिया जाएगा, जब तक वे काम करते रहेंगे।

श्री लक्ष्मीनारायण नायक: दूसरी बात मैं यह जानना चाहता हूं कि दूसरा बैच जो है, उस को वजीफा देने की स्वीकृति आप ने कब प्रदान की थी?

श्री राज नारायण: स्वीकृति तो तभी से है जब से यह योजना चली। तभी से सब को मालूम है और केन्द्र की ओर से उनको बकायदा रकमें दे दी गई हैं। यह सही है कि किन्हीं-किन्हीं राज्यों में जो टैक्निकल बारीकियां होती हैं कि किस किस विभाग में रुपया आए और स्वास्थ्य मंत्रालय से आया नहीं है और फाइनेन्स मंत्रालय ने इस को ठीक किया है या नहीं, ऐसी बातें होती हैं। कुछ राज्यों में देने में विलम्ब हुआ है, मध्य प्रदेश में देने में विलम्ब हुआ है। अब इसके बारे में पता चल रहा है कि धीरे धीरे यह रुपया दिया जा रहा है।

श्री निर्मल चन्द्र जैन: अध्यक्ष महोदय, सिवनी जिले में अभी तक कोई राशि नहीं बांटी गयी है। क्या स्वास्थ्य मंत्री जी बतायेंगे कि यह राशि बंट चुकी है या नहीं बंट चुकी है? अगर अभी तक नहीं बंटी है तो यह कब तक बंट जाएगी।

श्री राज नारायण: हम इसकी जानकारी करायेंगे। जिस जिले का माननीय सदस्य ने जिक्र किया है उस जिले की जानकारी मेरे पास नहीं है कि वहां राशि बंट चुकी है या नहीं। मगर मैं इतना जरूर आश्वस्त करना चाहता हूं कि वह रुपया जन स्वास्थ्य रक्षकों को मिलेगा और उसे कोई खा कर पचा नहीं सकेगा जब तक कि हम जिन्दा हैं।

श्री निर्मल चन्द्र जैन: कब तक मिलेगा?

श्री राज नारायण: जल्दी से जल्दी और हर महीने मिलेगा।

SHRI B. K. NAIR: The Kerala Health Minister has given a statement in Newspapers to-day saying that the implementation of the scheme in Kerala

would mean recruitment of 25,000 Health assistants. It is all right in the beginning since the Centre would take care of them, but later on, the State Government is going to be burdened with these people. They would organize themselves into Unions and start agitation and this burden the State Government is not able to bear. Since the government is aware of these difficulties, what alternative suggestion would the government make to the State Governments and what assistance are they going to give them?

श्री राज नारायण : मैं समझ नहीं पाया हूं।

MR. SPEAKER: What he says is: don't you think that the State Governments are experiencing difficulties in maintaining this establishment and later on they will organize themselves and demand permanent appointment.

श्री राज नारायण : स्टेट गवर्नमेंट्स जो कठिनाई महसूस कर रही है, अगर वे हमारे कथनानुसार समूचे ढंग से कदम उठायें तो उन्हें कोई कठिनाई नहीं होगी। जितनी सहायता हम से बनेगी, वह हम करेंगे। नहीं तो हम उस से कहेंगे कि आप करिए क्योंकि स्वास्थ्य का मामला पूर्ण रूपेण राज्य सरकारों का है। इसकी राज्य सरकार को ही रिस्पांसिबिलिटी लेनी होगी। हम बराबर पैसा देते चले जाएं यह संभव नहीं है।

श्री रतिलाल प्रसाद वर्मा : अध्यक्ष महोदय, मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जन स्वास्थ्य रक्षकों को एक पेटी दवा की दी जाएगी और पचास रुपए महीना दिया जाएगा जिससे कि वे एक महीने का कार्यक्रम चला सकें, तो क्या यह रकम वाजिब होगी? क्या मंत्री जी यह नहीं समझते हैं कि जन स्वास्थ्य रक्षक दवाओं के अभाव में या पैसे के अभाव में यह प्रयत्न नहीं करेंगे कि वे रोगियों से दवाओं का पैसा वसूल करने लगें? मंत्री जी ने इस संबंध में कौन-सी कार्यवाही की है?

श्री राज नारायण : श्रीमन् हम तो हर आदमी को ईमानदार मान कर चलते हैं जब तक कि उसकी बेईमानी पकड़ी न जाए। सुनी सुनाई बात पर हम विश्वास नहीं करते हैं। हमने सारी बातों को समझ कर यह तय किया है कि जन स्वास्थ्य रक्षक ईमानदारी से दवाओं का वितरण करें।

माननीय सदस्य ने कहा कि पचास रुपया कम है। श्रीमन् यह देखा जाए कि हमने विश्व स्वास्थ्य संगठन में जो भाषण दिया था और इस सारी योजना को बताया था तो उन्होंने भी यह स्वीकार किया था कि भारत ने इतनी बड़ी स्कीम चलायी है और विश्व के किसी भी अन्य राष्ट्र ने अब तक इतनी बड़ी स्कीम नहीं चलायी है। इस स्कीम में 6 लाख तो जन स्वास्थ्य रक्षक हो जाएंगे। फिर पांच लाख की आबादी पर दो डाक्टर हर गांव में एक एक प्रसूती दाई होगी। इसके बाद तीन डाक्टर होंगे। इस तरह से 15-16 लाख आदमियों को काम मिलेगा। सब लोग चिल्लाते हैं कि बेकारों को काम दो। स्वास्थ्य विभाग ने इन बेकारों को काम दे दिया है। इस चीज को कोई नहीं सोचता है। अगर किसी दूसरे मुल्क में यह हुआ होता तो इसका अधिक महत्व हुआ होता। हम इतनी मानसिक दासता में जकड़े हैं कि हम इस बारे में कुछ नहीं सोच पा रहे हैं। सम्मानित सदस्यों को कुछ तो इस बारे में सोचना चाहिए।

MR. SPEAKER: Next question—Shri G. S. Reddy—Shri Ishwar Chaudhry.

श्री ईश्वर चौधरी : अध्यक्ष महोदय, मेरा आपसे एक निवेदन है कि पांचवीं लोक सभा में कोई भी संसद सदस्य अपने स्थान से उठ कर सप्लीमेंटरी क्वेश्चन करने का संकेत दे देता था और स्पीकर जवाब दे देते थे या अनुमति दे देते थे। अब छठी लोक सभा में स्पीकर के सामने हाथ उठाना पड़ता है। सप्लीमेंटरी करने के लिए मैं बराबर अपनी सीट से उठता भी रहा हूं और हाथ भी उठाता रहा हूं। आपने मुझे —

MR. SPEAKER: Will you kindly put your question? If you do not want, then I will go to the next question. There are a number of questions left in the list. I cannot give chance to everybody if you do like this.

SHRI ISHWAR CHAUDHRY: *

MR. SPEAKER: Don't record.

SHRI ISHWAR CHAUDHRY *

MR. SPEAKER: Mr. Chaudhry, this is not a debate. Will you put the question? Otherwise, I will go to the next question.

---

Not recorded.